फ्रैंकफर्ट में प्रवासी भारतीयों से मुलाकात

(18.10.2019)

आज यहां फ्रैंकफर्ट में आप सभी भारतीय मूल के लोगों से मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हूं। यह स्वाभाविक है कि जब हम विदेश में अपने देशवासियों से मिलते हैं, तो उनसे मिलकर बहुत हर्ष होता है। आप सब यहां इतनी बड़ी संख्या में एकत्र हुए हैं। वास्तव में, आप सबके स्नेह, आवभगत एवं सम्मान से मैं भाव-विभोर हूं।

वैश्वीकरण (Globalisation) के इस युग में आज सभी देशों और राज्यों के बीच निकटता बढी है। सुशासन ने मूल देश और प्रवासी, दोनों स्थानों पर लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद की है। हाल ही में विभिन्न देशों के बीच सरकारों, राजनेताओं और जनता का परस्पर अंतर्संवाद बढा है। कई प्रवासी समुदाय घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय, दोनों ही संदर्भों में प्रभावशाली बन गए हैं।

भारतीय प्रवासी विश्व के सबसे बड़े प्रवासी समूह के रूप में उभरे हैं। प्रवासी भारतीयों में पीआईओ (PIO-भारतीय मूल के लोग), प्रवासी भारतीय (NRI) शामिल हैं। वे भारतीय समाज में व्याप्त विविधता के प्रतिबिम्ब हैं। भारतीय विदेश मंत्रालय के आंकडों के अनुसार दिसंबर, 2018 तक 3,09,95,729 भारतीय (लगभग तीन करोड दस लाख) पूरे विश्व में अलग-अलग देशों में रह रहे हैं चाहे वह रूस, अमेरिका, चीन जैसे बड़े देश क्यों न हो या फीजी, लीबिया, माल्टा जैसे छोटे देश।

भारतीयों ने अपनी पहचान हर जगह बनाई है। यह उनकी बहु-सांस्कृतिक गतिशीलता, सांस्कृतिक प्रतिबद्धता और सामाजिक, राजनीतिक सफलता ही है जो उसकी मातृभूमि और गंतव्य देश यानी कर्मभूमि के बीच संबंधों को जीवन्त बनाए रखती है।

1950 के दशक के बाद भारतीयों को उनकी शैक्षिक उपलब्धियां, पेशेवर कौशल और हाल के समय में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेष कौशल के बढ़ते स्वरूप और अपनी मातृभूमि के साथ मजबूत संबंधों के लिए जाना जाता है। उनकी बहु-सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता और मातृभूमि के साथ प्रगाढ़ संबंध उनको अलग पहचान देते हैं।

भारत और जर्मनी का एक सदी से भी अधिक समय से दीर्घकालिक सहयोग से लोगों के बीच आपसी संपर्क रहा है। मोटे तौर पर देखें तो भारत से जर्मनी के प्रवास को चार चरणों में बांटा जा सकता है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो आजादी के बाद या जर्मन परिप्रेक्ष्य में देखें तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इनमें से प्रत्येक चरण में विभिन्न समूहों का वर्चस्व था। भारत और जर्मनी के भीतर अपनी तरह का उनका विभिन्न नेटवर्क था।

1950 से 1960 के दशक में पहले चरण में छात्र प्रमुख प्रवासी समूह थे जो मुख्य रूप से शिक्षा के उद्देश्य से भारत से जर्मनी आए थे। हालांकि उनमें से कुछ अत्यंत कुशल और एकीकृत आप्रवासी के रूप में रहे।

दूसरे चरण में नर्सों का, खासकर केरल से, सबसे ज्यादा आप्रवासन हुआ। जबकि उस समय छात्रों का भी आना जारी था। 1960 के दशक में स्वास्थ्य सेवा के लिए योग्य नर्सों की कमी के कारण जर्मनी में बढ़ती स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए कैथोलिक पादरियों द्वारा युवा अप्रशिक्षित महिलाओं को लाया गया था। यह चरण ईसाई-केरल संघों के सक्रिय गठन का गवाह बना जिसमें सांस्कृतिक समूह, खेल आदि शामिल थे।

तीसरे चरण में मुख्य रूप से पंजाब प्रान्त से प्रवास को देखा गया जो 1970 और 1980 के दौरान भारत के राज्य पंजाब की अशांत स्थिति से संबंधित था। इस समूह के लिए गुरुद्वारे एक समुदाय के नेटवर्किंग और गठन के केंद्र बिंदु के रूप में उभरे। इनमें से कई प्रवासी ग्रामीण पृष्ठभूमि से आए थे और उनके पास उच्च शिक्षा की डिग्री नहीं थी।

वर्ष 2000 में भारत-जर्मन प्रवास का एक पूरी तरह से नया चरण शुरू हुआ। इस चरण में प्रवास करने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई और नए समूह का उद्भव हुआ।

कुशल पेशेवर जो मुख्य रूप से छात्र हैं, वे लोग भारत से जर्मनी प्रवास पर आए हैं। कुशल और उच्च शिक्षित प्रवासी भारतीय, जर्मनी में बढ़ रहे विभिन्न संघों के माध्यम से अपनी योग्यता को सामने ला रहे हैं। जर्मनी में कई ऐसे भारतीय संघ हैं जो आपसी सहयोग को बढ़ाने तथा भारत-जर्मनी एकीकरण को बढ़ाने के प्राथमिक उद्देश्य से बनाए गए।

इन संघों ने धार्मिक अनुष्ठानों, उत्सव, कलाकृतियों तथा परिणामों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक प्रथाओं को सामने लाने में योगदान दिया है तथा यह भारत की **बहुलवादी** और राष्ट्रीय पहचान को भी सामने लाते हैं।

हाल ही के दिनों में प्रवासी भारतीयों को **उच्च** अनुकूलन क्षमता, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा अपनी मातृभूमि के साथ लगाव बनाए रखने के लिए जाना जाता है।

जर्मनी में बर्लिन, फ्रेंकफर्ट, हेमबर्ग और म्यूनिख में भारतीय ज्यादा हैं। लगभग 1,08,965 एनआरआई 37,128 आईपी और 1,46,093 ओवर सीज इंडियन हैं। जिसमें करीब आधे लोगों के पास भारतीय पासपोर्ट है और शेष के पास जर्मन पासपोर्ट है।

यहां मुझे बताया गया है कि आज इस प्रतिनिधिमंडल में अधिकतर लोग केरल से हैं। केरल हमारे देश के सबसे सुन्दर प्रान्तों में से एक है। उस लैंड ऑफ कोकोनट एंड बैकवाटर्स की प्राकृतिक सुन्दरता, वहां के लोगों की सादगी और आतिथ्य पूरे विश्व से पर्यटकों को केरल की ओर खींचता है। मुझे स्वयं केरल बहुत **आकर्षित करता** है। हमारे केरल से अन्य व्यवसायों के साथ-साथ नर्सिंग के क्षेत्र में बहुत-से लोग यहां आए हैं।

आप लोगों ने अपने कार्य कौशल एवं सांस्कृतिक लगाव से जर्मनी में एक छोटा भारत बनाया है। 1970 में बनी 'केरला समाजम् फ्रैंकफर्ट' नामक संस्था ने पिछले चार दशकों से अपनी संस्कृति के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुझे बताया गया है कि अभी 14 सितम्बर, को आपने इस संस्था के तहत काफी हर्षोल्लास के साथ ओणम मनाया। मैं इस संस्था से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूं।

मैं आशा करता हूं कि यहां रह रहे सभी प्रवासी भारतीय निरंतर तरक्की करेंगे और अपनी जन्म भूमि एवं कर्म भूमि दोनों का नाम रोशन करेंगे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं पुनः आपका धन्यवाद करता हूं।